वेद-संदेश

ओ३म्। इन्द्राग्नीऽअपादियं पूर्वागात्पद्वतीभ्यः।
हित्वी शिरो जिह्वया वावदच्चरत्रिꣳशत्पदा न्यक्रमीत्॥

यजुर्वेद-३३.९३

पदार्थः-(इन्द्राग्नी) अध्यापकोपदेशकौ (अपात्) अविद्यमानौ पादौ यस्याः सा (इयम्) (पूर्वा) प्रथमा (आ)(आगत्) आगच्छति (पद्वतीभ्यः) बहवः पादा यासु प्रजासु ताभ्यः सुप्ताभ्यः प्रजाभ्यः (हित्वी) हित्वा त्यक्त्वा (शिरः) उत्तमाङ्गम् (जिह्वया) वाचा (वावदत्) भृशं वदति (चरत्) चरति (त्रिंशत्) एतत्सङ्ख्याकान् (पदा) प्राप्तिसाधकान् मुहूर्त्तान् (नि)(अक्रमीत्) क्रमते॥

भावार्थः- हे मनुष्याः! या वेगवती पादशिराद्यवयवरहिता प्राणिप्रबोधात्पूर्व-भावनी जागरणहेतुः प्राणिमुखैर्भृशं वदतीवं त्रिंशत्मुहूर्त्तानन्तरं प्रतिप्रदेशमाक्रमीत् सोषा युष्माभिर्निद्रालस्ये विहाय सुखाय सेवनीया॥

पदार्थः- हे (इन्द्राग्नी) अध्यापक उपदेशक लोगो! जो (इयम्) यह (अपात्) विना पग की (पद्वतीभ्यः) बहुत पगोंवाली प्रजाओं से (पूर्वा) प्रथम उत्पन्न होनेवाली (आ, आगात्) आती है (शिरः) शिर को (हित्वी) छोड़ के अर्थात् विना शिर की हुई प्राणियों की (जिह्वया) वाणी से (वावदत्) शीघ्र बोलती अर्थात् कुक्कुट आदि के बोल से उषःकाल की प्रतीति होती इससे बोलना धर्म उषा में आरोपण किया जाता है (चरत्) विचरती है और (त्रिंशत्) तीस (पदा) प्राप्ति के साधन मुहूर्तों को (नि, अक्रमीत्) निरन्तर आक्रमण करती है वह उषा प्रातः की वेला तुम लोगों को जाननी चाहिए॥

भावार्थः- हे मनुष्यों! जो वेगवाली, पाद, शिर आदि अवयवों से रहित, प्राणियों के जानने से पहले होनेवाली, जागने का हेतु, प्राणियों के सुखों से शीघ्र बोलती हुई सी तीस मुहूर्त्त (साठ घड़ी) के अनन्तर प्रत्येक स्थान को आक्रमण करती है वह उषा निद्रा, आलस्य को छोड़ तुमको सुख के लिये सेवन करना चाहिये॥

❖ ओ३म् ❖

आर्ष-ज्योतिः

श्रीमद् दयानन्द वेदार्ष-महाविद्यालय-न्यास का द्विभाषीय मासिक मुखपत्र

वैशाख-ज्येष्ठमासः, विक्रम संवत् - २०७१

वर्ष : ६ अंक ७१ मई २०१४

ज्योतिष्कृणोति सूनरी

संरक्षक - संस्थापक
स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती

❖

मुख्य सम्पादक
डॉ. धनञ्जय आर्य (अवैतनिक)

❖

सम्पादक
चन्द्रभूषण आर्य, रवीन्द्र आर्य

❖

कार्यकारी सम्पादक
ब्र. शिवदेव आर्य

❖

व्यवस्थापक
ब्र. अनुदीप आर्य, ब्र. कैलाश आर्य

❖

कार्यालय
श्रीमद्दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल
दून वाटिका-२, पौंधा, देहरादून (उ.ख.)
दूर-०१३५-२१०२४५१,०९४१११०६१०४
ई-मेल : arsh.jyoti@yahoo.in
website: www.pranawanand.org

❖

सदस्यता शुल्क
आजीवन - १०००.०० रुपये
वार्षिक: ५०.००रु. / एक प्रति: ५ रु.

वेद-संदेश

आपके आगमन की प्रतीक्षा में .....

कार्यक्रम विवरणिका

दिनाङ्क : ३० मई २०१४ शुक्रवार

उद्घाटन सत्र, यज्ञोपासना एवं ध्वजारोहण	प्रातः ०७:०० बजे
राष्ट्रधर्म सम्मेलन	पूर्वाह्न १०:३० बजे
यज्ञोपासना एवं वेद-वेदाङ्ग सम्मेलन	अपराह्न ०३:०० बजे
धर्मोपदेश, भजन एवं वैदिक सिद्धान्तों पर शङ्का समाधान	रात्रि ०८:०० बजे

दिनाङ्क : ३१ मई २०१४ शनिवार

यज्ञोपासना एवं धर्मोपदेश	प्रातः ०७:०० बजे
पुरोहित सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह	पूर्वाह्न १०:३० बजे
यज्ञेपासना एवं विद्या-व्रत सम्मेलन	अपराह्न ०३:०० बजे
धर्मोपदेश, भजन एवं वैदिक सिद्धान्तों पर शङ्का समाधान	रात्रि ०८:०० बजे

दिनाङ्क : १ जून २०१४ रविवार

यज्ञोपासना	प्रातः ०७:०० बजे
गुरुकुल सम्मेलन	पूर्वाह्न १०:०० बजे
व्यायाम सम्मेलन	मध्याह्न १२:३० बजे
ऋषिलंगर	

आपके आगमन की प्रतीक्षा में .....

'सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा' यह भारतीय संस्कृति विश्व की प्रथम संस्कृति है। इस संस्कृति का प्रत्येक अंग, कार्य व परम्परा पूर्णत: वैज्ञानिक, तर्कसंगत तथा वेदोक्त है। भारतीय संस्कृति जीवन को आनन्दित करने का एक साधन है। यह संस्कृति यथार्थ में जीवन जीना सिखलाती है। एक दूसरे के प्रति अपने कर्तव्यों को बताती है। **'पुमान् पुमासं परिपातु विश्वत:'** अर्थात् प्रत्येक मनुष्य एक-दूसरे की रक्षा करने वाला बने। **'सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु'** अर्थात् समस्त दिशाओं में मेरे मित्र हो, मेरा कोई शत्रु न हो। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य भारतीय संस्कृति की दृढ़ता तथा महत्ता को सर्वत्र दिग्दर्शित कराता है। उदात्तभावों वाली इस भारतीय संस्कृति की आत्मा संस्कृत में बसती है। संस्कृत भाषा ही भारतीय परम्परा एवं सभ्यता को अपने में समाविष्ट की हुई है।

प्राचीन गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति संस्कृत एवं संस्कृति की ध्वजवाहक है। गुरुकुल ऐसा कुल जिसमें पहुँचकर बालक (छात्र) अपने सम्पूर्ण कष्टों(बुराईयों) से मुक्त होने की शिक्षा प्राप्त कर सके तथा जीवन मुक्त होने की विद्या प्राप्त करे। आचार्य अर्थात् गुरु **आचार्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्त:। तं रात्रीस्तिस्त्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभिसंयन्ति देवा:।।** इस अथर्ववेदीय मन्त्रानुसार बालक को शिक्षा देने के लिए स्वीकार करते हुए आचार्य इस प्रकार सुरक्षित, संभाल कर रखता है जैसे माता पुत्र को अपने गर्भ में सुरक्षित संरक्षित कर रखती है तथा **'मम व्रते ते हृदयं दधामि मम चित्तं अनुचित्तं ते अस्तु'** अर्थात् तेरे हृदय को मैं अपने हृदय में लेता हूँ, तेरे चित्त को अपने चित्त में धारण करता हूँ इस प्रकार का संकल्प लेकर बालक का सर्वांगीण विकास करता है। गुरु जो सदैव शिष्य का हित चिन्तन करते हुए शिष्य को उद्बुद्ध करता हुआ श्रेष्ठता की ओर ले जाता है, ऐसे गुरु का कुल गुरुकुल है। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति स्वयं तक ही सीमित नहीं रहती अपितु **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना से ओतप्रोत है तथा **'सर्वजनहिताय सर्वजन सुखाय'** एवं **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** का लक्ष्य प्रदान कराती है।

वर्तमान पाश्चात्य के अन्धानुकरण में अपनी संस्कृति, सभ्यता, संस्कार एवं संस्कृत भाषा का संरक्षण करना अनिवार्य है। यह बात सर्वथा स्मरणीय है कि यदि किसी वृक्ष को सर्वथा विनष्ट करना है तो उसे समूल नष्ट करो। गुरुकुलीय आर्ष शिक्षा पद्धति भारतीय संस्कृति का मूल है। आज भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत को विनष्ट करने का षड़यन्त्र चारों दिशाओं से हो रहा है। हमारा कर्तव्य हो कि यथा सामर्थ्य अपनी संस्कृति को बचाने का प्रयास करें।

आत्मीय बन्धु! श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा देहरादून, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत भाषा के संरक्षण महायज्ञ की एक समिधा है। आप ऋषिभक्तों का स्नेह सींचित आशीर्वाद घृत है। आयें! वेदाग्नि में आहूत होकर इस यज्ञ को पूर्ण करें।

महानुभावों! भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के रक्षार्थ आगे बढियें। आपका सहयोग गुरुकुल परिवार का मनोबल है। आप लोगों का सहयोग हमकों निरन्तर मिलता रहा तो निश्चित ही गुरुकुल समाज के लिए, भारतीय संस्कृति और संस्कृत के लिए नया आयाम स्थापित कर सकेगा। आप सबसे यही निवेदन है कि **३०, ३१ मई एवं १ जून शुक्र, शनि, रविवार को गुरूकुल पौन्धा, देहरादून के वार्षिकोत्सव पर अवश्य पधारे तथा कार्यक्रम को सफल बनायें।**

आपके आगमन की प्रतीक्षा में .....

आचार्य डॉ. धनञ्जय

आवागमन सूचना

जो सज्जन रेल तथा बस द्वारा गमनागमन करना चाहें, उनके लिए देहरादून स्टेशन एवं बसस्थानक (I.S.B.T.) से गुरुकुल तक वाहन की व्यवस्था रहेगी। रेल व बस द्वारा गमनागमन करने वाले सज्जन सम्पर्क अवश्य करें। गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली-४९ से ३१ मई रात्रि १०.०० बजे देहरादून के लिए बसें चलेंगी, जिनका किराया ६०० रुपये प्रति व्यक्ति होगा। जो बसें दिल्ली से आयेंगी, वे देहरादून से सहस्रधारा व हरिद्वार होते हुए वापस दिल्ली पहुँचेंगी।

सम्पर्क सूत्र : -(दिल्ली) ०११-२६५२५६६३, ०९८६८८५५१५५

(देहरादून) ९४१११०६१०४, ९४११३१०५३०, ८८१०००५०९६

निमन्त्रण-पत्र

आप सबको यह जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि हिमालय की गोद में, पर्वतमाला से परिवेष्टित देहरादून के निकट पहाड़ों की रानी मसूरी की तलहटी में, प्राचीन ऋषि-मुनियों द्वारा सुसेवित समुद्र के टापू के सदृश शोभायमान विशाल भूखण्ड में स्थापित श्रीमद्दयानन्द आर्ष-ज्योतिर्मठ गुरुकुल का पञ्चदश वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस दिनांक **३०,३१ मई एवं १ जून २०१४, शुक्रवार, शनिवार और रविवार** को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस के इस शुभ अवसर पर आप इष्टमित्रों सहित सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

आमन्त्रित विद्वान्

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी देवव्रत सरस्वती, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी धर्मेश्वरानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी आर्यवेश, स्वामी यतीश्वरानन्द (विधायक), **श्री सहदेव सिंह पुण्डीर** (विधायक), **प्रो. शशिप्रभाकुमार, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, डॉ. वेदप्रकाश श्रोत्रिय, डॉ वेदप्रकाश , प्रो. महावीर जी** (कुलपति), **डॉ. योगानन्द शास्त्री** (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली सरकार), **डॉ. विक्रम विवेकी, पं. धर्मपाल शास्त्री, डॉ. वेदपाल, प्रो. बलवीर, डॉ. रघुवीर वेदालङ्कार, डॉ. ज्वलन्तकुमार, डॉ कृष्णकान्त वैदिक, डॉ. विनय विद्यालङ्कार, डॉ. दीनदयाल वेदालङ्कार, आचार्या अन्नपूर्णा, श्री नारायण सिंह राणा, श्री वीरेन्द्र शास्त्री, श्री योगेन्द्र याज्ञिक, डॉ. पूर्णसिंह डबास, डॉ. भोला झा, श्री प्रेमप्रकाश शर्मा, श्री ज्ञानचन्द्र गुप्ता, श्री सुरेन्द्रपाल आर्य, श्री वेदवसु शास्त्री, श्री उमेदसिंह विशारद, माता विमला, श्री अजबसिंह आर्य, श्री चतरसिंह नागर, श्री चन्द्रपाल शास्त्री, डॉ. जयपाल सिंह, वैद्य हंसराज, पं. भीष्म आर्य, पं. कुलदीप भास्कर, आचार्य जयकुमार, आचार्य बुद्धदेव, आचार्या कल्पना, आचार्या शारदा, आचार्य रोहित।**

भजनोपदेशक : पं. ओमप्रकाश वर्मा, पं. सत्यपाल सरल।

त्रिदिवसीय वार्षिकोत्सव एवं स्थापना दिवस समारोह
तथा
यजुर्वेद पारायण महायज्ञ

कार्यक्रम विवरणिका

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३० मई २०१४ शुक्रवार प्रातः ०७:०० बजे

उद्घाटन सत्र, यज्ञोपासना एवं ध्वजारोहण

वैदिक संस्कृति में शिक्षा देने वाले गुरु को आचार्य कहा गया है अर्थात् **'आचारं ग्राहयति, आचिनोति अर्थान् आचिनोति बुद्धिम्'** जो सदाचार को ग्रहण कराता हो, वेदादि शास्त्रों के अर्थों को जानता हो जीवन के लक्ष्य को बाताता हो, बुद्धि को चयनित करता हो, उसे आचार्य कहते हैं। शिष्य समित्पाणि होकर आचार्य के सम्मुख पहुँचकर विद्या ग्रहण करता है। समित्पाणि अर्थात् श्रद्धावनत हो हाथ में समिधा लेकर जाना, जैसे समिधा (यज्ञिय लकड़ी) अग्नि से स्पर्श होने पर प्रदीप्त हो उठती है। वैसे ही शिष्य आचार्य के ज्ञानाग्नि से संयुक्त होकर प्रज्वलित हो जाता है। गुरु शिष्य का यह वैज्ञानिक सम्बद्ध गुरुकुलीय आर्ष परम्परा ही है। इन्हीं उदात्त प्राचीन परम्परा को हृदयंगम किये हुये श्रीमद् दयानन्द आर्ष ज्योतिर्मठ गुरुकुल पौन्धा, देहरादून में आपका हार्दिक अभिनन्दन-स्वागत है.....

यज्ञाध्यक्ष	:	**आचार्य यज्ञवीर शास्त्री।**
ब्रह्मा	:	**डॉ. सोमदेव शास्त्री** (मुम्बई)।
ऋत्विक्	:	**गुरुकुल के ब्रह्मचारी।**
अध्वर्यु	:	**श्री रवीन्द्र शास्त्री एवं श्री अजीत शास्त्री।**
यजमान	:	श्री सत्यवीर शास्त्री (बादल), श्री श्रीकान्त जी वर्मा (भूमिदाता), श्री कृष्णमुनि वानप्रस्थ, श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, श्री योगेशपुरी, श्री भुवनेश अरोड़ा, डॉ. सत्येन्द्र आर्य, माता रामदेवी अरोड़ा, माटा परिवार, सरल परिवार, माता राज महेन्द्रु, सचदेवा परिवार, सिकारिया परिवार, ई. हजारीलाल, श्रीमती अरुणा गुप्ता, माता सरला बाली, श्री हर्षवर्धन आर्य, श्री आदित्य आर्य, श्री नरेश वर्मा, श्री यज्ञदत्त शर्मा (नारायणगढ़), श्री जयप्रकाश चौहान, श्री राजकुमार टांक, श्रीमती इन्दुबाला, श्रीमती पुष्पा गुसांई, श्रीमती सुखदा सोलंकी, श्री ईश्वर दयालु आर्य, श्री धर्मपाल खुराना, श्री जगतसिंह आर्य, श्री पवन सिंह आर्य, श्री मनमोहन आर्य, श्री राजेन्द्र कम्बोज, श्री संजीव भटनागर, श्री यशमोद आर्य, श्री चन्द्रपाल आर्य, चौ. श्री विनय कुमार (खतौली), श्री जितेन्द्र सिंह राणा, माता पुष्पलता आर्या, माता विद्या छाबड़ा, श्रीमती रविला गुप्ता, श्रीमती सुनीता खोसला, माता आशा वर्मा, श्री चन्द्रगुप्त विक्रम, श्री राजीव अरोडा, श्री लाल सिंह आर्य (सुलतानपुर)।
यजमान स्नातक	:	श्री रवीन्द्र शास्त्री, श्री यदुनाथ शास्त्री, श्री दीपेन्द्र शास्त्री, श्री पुष्पेन्द्र शास्त्री, श्री वेदप्रकाश शास्त्री, श्री जसवेन्द्र शास्त्री, श्री चन्दन शास्त्री, श्री दीपक शास्त्री।
स्वागताध्यक्ष	:	श्री चन्द्रभूषण आर्य।
ध्वजारोहण	:	कै. अभिमन्यु (प्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी)।
सान्निध्य	:	श्री विद्यामित्र ठुकराल जी।

आत्मीय निवेदन : याज्ञिक पुरुष धोती, कुर्त्ता तथा महिलाएँ साड़ी ही पहनें। यज्ञीय वस्त्र यदि केसरी रंग का हो तो उत्तम है। प्रातः ७ से ९.३० बजे तक एवं सायं ३ से ५.३० बजे तक यज्ञोपासना का समय रहेगा।

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३० मई २०१४ शुक्रवार पूर्वाह्न : १०:३० बजे

राष्ट्रधर्म सम्मेलन

प्रत्येक मनुष्य के लिए राष्ट्रधर्म अपरिहार्य है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रधर्म की अनभिज्ञता ही साम्प्रदायिक एवं भ्रष्टाचारादि दुर्गुणों की जननी है। व्यक्ति राष्ट्र हित को त्यागकर स्वहित में जब कार्य करता है तो देशोन्नति बाधित होती है। वर्तमान में उत्पन्न हुई प्रत्येक राष्ट्रिय समस्या स्वार्थ का ही परिणाम है। वेदों में राष्ट्रधर्म के विषय में उदात्ततम चिन्तन है। **'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः'** अर्थात् हम राष्ट्रजागरण के पुरोधा बनें, यह वैदिक विचार राष्ट्रधर्म का मूल है। गुरुकुल पौन्धा, देहरादून के वार्षिकोत्सव पर आपको वैदिक ऋचाओं के आधार पर राष्ट्रधर्म के व्यापक स्वरुप को समझने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हो रहा है। आओ राष्ट्रधर्म को वास्तविक स्वरुप में समझकर देशोत्थान में सहयोगी बनें।

सत्राध्यक्ष : स्वामी श्रद्धानन्द।

सारस्वत अतिथि : डॉ. रघुवीर वेदालंकार।

सत्र संयोजक : ब्र. सत्यकाम आर्य, ब्र. जितेन्द्र आर्य।

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७१ तदनुसार

दिनाङ्क : ३० मई २०१४ शुक्रवार अपराह्न : ०३:०० बजे

यज्ञोपासना एवं वेद-वेदाङ्ग सम्मेलन

वेद हमारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के मूल है। आज संसार में प्रवर्तमान प्रत्येक ज्ञान-विज्ञान का आदिमूल वेद ही सर्वमान्य है। '**वेदोऽखिलो धर्ममूलम्**' अर्थात् वेद धर्म, संस्कृति एवं सभ्यता के मूल है। धर्म, संस्कृति एवं सभ्यता के वास्तविक स्वरुप को समझने के लिए वेदों का पठन-पाठन अनिवार्य है। आज वैज्ञानिकयुग में सामान्य व्यक्तियों के पास वेदों के ज्ञान का पर्याप्त अभाव है। तदर्थ वैदिक ज्ञान-विज्ञान को अवगत करने के लिए गुरुकुल पौन्धा ने वेदवेदाङ्ग सम्मेलन आयोजित किया है। जहाँ आपको देश के विख्यात वैदिक विद्वान् वेदोपदेश से आप्लावित करने हेतु उपस्थित हो रहे हैं। इस स्वर्णिम अवसर का लाभ उठाकर वेद ज्ञान से अपनी आत्मा को परितृप्त करें।

सत्राध्यक्ष : डॉ. ज्वलन्त कुमार।

सारस्वत अतिथि : प्रो. महावीर (कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय)।

सत्र संयोजक : ब्र. ओमप्रकाश आर्य, ब्र. विजय आर्य।

ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया २०७१ तदनुसार

दिनाङ्क : ३० मई २०१४ शुक्रवार रात्रि : ०८:०० बजे

धर्मोपदेश, भजन एवं वैदिक सिद्धान्तों पर शङ्का समाधान

सत्राध्यक्ष : पं. ओ३म् प्रकाश वर्मा।

सारस्वत अतिथि : डॉ. विक्रम विवेकी।

सत्र संयोजक : ब्र. शिवकुमार।

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३१ मई २०१४ शनिवार प्रात : ०७:०० बजे

यज्ञोपासना

यज्ञ हमारी भारतीय संस्कृति की अमिट पहचान है। ऋषियों मुनियों ने यज्ञ के रुप में मानवजाति को एक अमूल्य वरदान दिया है। वेद कहता है कि **'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः'** अर्थात् यज्ञ इस संसार की नाभि है। जैसे मानव शरीर के पोषणार्थ नाभि की आवश्यकता अपरिहार्यरुप में है वैसे ही इस संसार के कल्याणार्थ यज्ञ की आवश्यकता है। आज समस्त संसार पर्यावरणीय समस्याओं से समावृत्त है। यज्ञ अनेक रोगों के प्रशमन का अमोघ उपाय भी है। यज्ञोपासना के माध्यम से आप सबको याज्ञिक महत्व को समझने एवं साक्षात् अनुभूत करने का सुनहरा अवसर प्रदान हो रहा है। आईये! आत्मलाभ एवं धर्मलाभ उठायें.....

अध्वर्यु : ब्र. शिवकुमार, ब्र. कैलाश।

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३१ मई २०१४ शनिवार पूर्वाह्न : १०:३० बजे

पुरोहित सम्मेलन एवं पुरस्कार समारोह

पुरोहित समाज अग्नि स्वरुप है। यथा प्रत्येक धार्मिक कार्यों में यज्ञादि के निमित्त अग्नि सर्वप्रथम पूजनीय है। तथैव पुरोहित भी समाज को नव्य-भव्य दिशा की ओर ले जाने वाला एक महनीय अङ्ग है। आज जैसे-जैसे घरों से पुरोहित दूर

होते जा रहे हैं, वैसे-वैसे ही धार्मिक सभ्यता, संस्कृति एवं घरों की पवित्रता भी विनष्ट होती जा रही है। जिसके कारण आज समाज का धर्म एवं संस्कृति से सम्बन्ध विच्छिन्न होता जा रहा है। धार्मिक परम्परा कथावशेष होती जा रही है। सामाजिकता कालकवलित हो रही है। ऐसे विकराल काल में पुरोहितों की अनिवार्यता नैसर्गिक रुप में स्वीकार्य है। वेद कहता है कि **'अग्निमीडे पुरोहितम्'** अर्थात् पुरोहित स्वरुप अग्नि की उपासना करो। अग्नि के इस पुरोहितस्वरुप को अक्षुण्ण बनाने के लिए पुरोहित की आवश्यकता है। आओ जाने अग्नि स्वरुप पुरोहित को.....

इस सम्मेलन का ही एक अङ्ग पुरस्कार समारोह है। गुरुकुल के ब्रह्मचारी कठिन तपश्चर्या का आचरण कर अपने को कुन्दन बनाने का प्रयास करते हैं। उनमें भी प्रत्येक क्षेत्र में जिन्होने अत्यन्त परिश्रम एवं ईमानदारी से श्रेष्ठतम प्रदर्शन किया है। ऐसे परिश्रमी ब्रह्मचारियों को गुरुकुल पौन्धा स्व. श्री देवदत्तबाली जी के स्मृति में तीन एवं स्व. कर्नल विरेन्द्र कुमार भाटिया जी की स्मृति में दो क्रीडा पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

सत्राध्यक्ष : आचार्य विरेन्द्र शास्त्री।

सारस्वत अतिथि : डॉ. वेदप्रकाश श्रोत्रिय।

सत्र संयोजक : ब्र. ओमप्रकाश, ब्र. विजय आर्य।

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३१ मई २०१४ शनिवार अपराह्न : ०३:०० बजे

यज्ञोपासना एवं विद्या-व्रत सम्मेलन

विद्या एवं व्रत मानव जीवन का मूल है। विद्या की प्राप्ति गुरु के समक्ष समित्पाणि होकर होती है। विद्योपार्जन सबसे कठिन कार्य है। तदर्थ विद्यार्थी गुरुकुल में प्रविष्ट होकर विद्योपार्जन के लिए आचार्य के निर्देशन में सतत् प्रयास करते है। गुरुकुल के व्रती विद्यार्थियों की विद्या की उपादेयता से अवगत होना भी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में नितान्त आवश्यक है।

उपनिषद् की '**विद्या सन्धिः प्रवचनं सन्धानम्**' इस पङ्क्ति को साक्षात् चरितार्थ होते हुए देखने के लिए गुरुकुल आपको सादर आमन्त्रित करता है। गुरुकुल में अध्ययनरत विद्यार्थियों एवं पूर्व में अध्ययन कर व्रती बन चुके छात्रों के विद्यागाम्भीर्य का दर्शन आप सबके लिए एक अपूर्व क्षण होगा। इस अवसर पर आर्ष-न्यास द्वारा संचालित मासिक पत्र आर्ष-ज्योतिः विशेषांक तथा अन्य पुस्तकों का लोकार्पण भी किया जायेगा।

सत्राध्यक्ष : डॉ. विनय विद्यालंकार।

सारस्वत अतिथि : डॉ. धर्मेंद्र कुमार (सचिव, संस्कृत आदमी, दिल्ली)।

सत्र संयोजक : ब्र. यशोदेवः, ब्र. हंसराज आर्य।

ज्येष्ठ शुक्ल तृतीया २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : ३१ मई २०१४ शनिवार रात्रि : ०८:०० बजे

धर्मोपदेश, भजन एवं वैदिक सिद्धान्तों पर शङ्का समाधान

सत्राध्यक्ष : पं. धर्मपाल शास्त्री।

सारस्वत अतिथि : पं. सत्यपाल सरल।

सत्र संयोजक : ब्र. सत्यकाम आर्य।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : १ जून २०१४ रविवार प्रात : ०७:०० बजे

यज्ञोपासना एवं पूर्णाहुति

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : १ जून २०१४ रविवार पूर्वाह्न : १०:०० बजे

वार्षिकोत्सव एवं गुरुकुल सम्मेलन

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के रक्षार्थ गुरुकुलों की उपादेयता सर्वसम्मत है। पाश्चात्य सभ्यता के भयङ्कर झञ्झावात के आवेग से भारतीय समाज एवं भारतीय परम्परा उखड़ती सी प्रतीत हो रही है। भारतीय समाज के इस उखड़ते आभास को समूल नष्ट करने का परिपूर्ण सामर्थ्य गुरुकुलपरम्परा में है।

ऋषि-मुनियों की यह वैज्ञानिक गुरुकुलीय शिक्षापद्धति आज भी भारतीय परम्परा की कवच बनकर कार्य कर रही है। वर्तमान समय में शिक्षा के बाजारीकरण हो जाने पर भी गुरुकुल शिक्षा सरल एवं सर्वसुलभ है। गुरुकुल

जैसी शिक्षापद्धति ही शास्त्रपरम्परा को सुरक्षित रखने में समर्थ है। आईये! वार्षिकोत्सव के अवसर पर उपस्थित हो मिलकर इसका सम्पोषण करें.....

आशीर्वाद : वेदवेदाङ्गकोविद पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी।

सत्राध्यक्ष : माता परमेश्वरी देवी (संरक्षिका गुरुकुल पौंधा)।

सारस्वत अतिथि : डॉ. योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली)।

सत्र संयोजक : श्री रवीन्द्र आर्य, श्री अजीत आर्य।

धन्यवाद ज्ञापन : आचार्य डॉ धनंजय।

ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्थी २०७१ तदनुसार
दिनाङ्क : १ जून २०१४ रविवार मध्याह्न : १२:३० बजे

व्यायाम सम्मेलन

व्यायाम शारीरिक स्वास्थ्य का मूलमन्त्र है। मानसिक एवं शारीरिक सौष्ठव के लिए व्यायाम अत्यन्त उपादेय है। आज समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग तनावग्रस्त है। जिसका प्रारम्भिक कारण व्यायाम से दूरी है। गुरुकुल में ब्रह्मचारी प्रतिदिन प्रातःसायं अनेकविध आसनों एवं क्रीडाओं के साथ-साथ प्राणायाम की शिक्षा भी अर्जित करते हैं। जिसके कारण विद्यार्थी का सर्वाङ्गीण विकास सम्भव होता है। इसीलिए कहा गया है कि **'शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्'**

इस अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों द्वारा अनेकविध व्यायामों का प्रदर्शन आपको आश्चर्यचकित एवं भावविभोर कर देगा। आपके अन्दर शारीरिक विकास की एक नूतन ऊर्जस्वल प्रेरणा देगा। इस भव्य कार्यक्रम में आप की उपस्थिति ही ब्रह्मचारियों के परिश्रम की सार्थकता होगी।

सत्राध्यक्ष : स्वामी धर्मेश्वरानन्द।

सारस्वत अतिथित : श्री नारायण सिंह राणा।

सत्र संयोजक : ब्र. जितेन्द्र आर्य, ब्र. सुखदेव आर्य।